7 बालक का स्वप्न

किसी सेठ के यहाँ एक लड़का नौकरी करता था। एक रात्रि स्वप्न में वह चिल्ला उठा, "अहो, मेरा भाग्य" सेठ ने यह सुन बालक को जगाकर पूछा, "अरे, क्यों चिल्ला रहा था ?" वह लड़का कहने लगा, "यों ही, कोई खास बात नहीं।"

अगले दिन सेठ ने उस लड़के से स्वप्न की बात पुनः पूछी, पर वह टाल गया। उस दिन से बालक छिपकर पढ़ने लगा। एक दिन सेठ ने कहा, "सुन रे लड़के, आज या तो तू स्वप्न की बात बता दे या मेरे यहाँ काम करना बंद कर दे !" लड़का चतुर था, होनहार था। उसने नौकरी छोड़ दी।

उसने पढ़ाई चालू रखी। इसी बीच उसे गाँव के जमींदार के यहाँ नौकरी मिल गई। एक दिन सेठ जमींदार के यहाँ कपड़े लेकर आया। उसने लड़के को वहाँ काम करते देखा। सेठ ने जमींदार को लड़के के स्वप्न और निकाले जाने की बात बता दी। इस पर जमींदार ने उसे बुलाकर कहा, "लड़के, या तो तू मुझे अपने स्वप्न की बात बता दे, अन्यथा आज ही मैं तुझे अपने यहाँ से हटा दूँगा" परन्तु वह लड़का धुन का पक्का और दृढ़ निश्चयी था।

उसने कुछ न बताया और नौकरी से अलग हो गया। उसने अपना अध्ययन चालू रखा। वह किसी प्रकार अपनी सूझ–बूझ से राजा के यहाँ साधारण नौकर हो गया और फिर धीरे–धीरे उन्नति करते–करते एक दिन राजा का मंत्री बन गया।

अकस्मात् एक दिन वही जमींदार राजा के यहाँ आया। उसने उसे पहचान लिया और राजा से सारी बात कह सुनाई। राजा ने मंत्री को बुलाकर पूछा,

"मंत्रीजी, आपने बहुत दिन पहले सेठ के यहाँ क्या स्वप्न देखा था ? आप या तो वह स्वप्न हमें बताइए या फिर दंड के लिए तैयार हो जाइए !"

मंत्री ने स्वप्न बताने से इंकार कर दिया। राजा ने नाराज होकर मंत्री को कैदखाने में डाल दिया। कुछ दिन बाद पड़ोसी राजा ने इस राजा पर चढ़ाई करने की सोची। उसने सीमा पर अपनी सेना भी जमा कर ली। उसने इस राजा तथा मंत्रियों की चतुराई जानने के लिए दो घोड़ियाँ भेजीं और पुछवाया कि इनमें माँ कौनसी है और बेटी कौनसी है। सभी ने अपनी–अपनी बुद्धि लगाई पर समस्या को कोई हल न कर सका।

राजा का नौकर, बंदी मंत्री को, नित्य भोजन देने जाता था। उसने सारी बात मंत्री को बताई। राजा की परेशानी सुनकर मंत्री कहने लगा,

"यह कौन कठिन बात है। दोनों को नदी में नहलाने ले जाओ। जो पहले, आगे नदी में घुसे वहीं माँ है और जो पीछे चले वह बेटी है।"

इसके बाद उसी प्रकार के दो तीन प्रश्न राजा ने भेजे। मंत्री ने सबको हल कर दिया। पड़ोसी राजा ने यह सोच कर कि इसे हराना कठिन है, अपनी सेनाएँ हटा ली। उसने संदेशा भिजवाया कि जिस व्यक्ति ने मेरे प्रश्नों को हल किया है, उससे हम अपनी कन्या का विवाह करना चाहते हैं।

इस समाचार से राज्य भर में सनसनी फैल गई। उस बंदी मंत्री की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। राजा ने उसे तुरंत मुक्त कर दिया। इसके बाद पड़ोसी राजा ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। राजा ने मंत्री को अपना आधा राज्य भी दे दिया। इसके बाद इस राजा ने भी उसे बहुत–सी चल और अचल संपत्ति भी दी।

कुछ दिन बाद एक दिन प्रातःकाल इस मंत्रीराजा ने दोनों राजाओं, जमींदार तथा सेठ सभी को अपने यहाँ आमंत्रित किया। जब वे सब वहाँ उपस्थित हुए तो उस समय यह मंत्रीराजा पलंग पर महल के विशाल एवं सुसज्जित कक्ष में लेटे थे। उनकी पत्नी उनके पास बैठी थी। इसके अतिरिक्त अन्य कई नौकर भी इनकी सेवा में जुटे थे। चारों व्यक्ति भी उसके आस–पास बैठे थे ।

तब उस मंत्रीराजा ने कहा, "यही दृश्य जो आप लोग इस समय यहाँ देख रहे हैं, मैंने स्वप्न में देखा था, और तभी मैं स्वप्न में चिल्लाया था, "अहो, मेरा ऐसा भाग्य !" मैंने तब यह बात आप लोगों को बता दी होती तो आप में से कोई भी इसे पूरा न होने देता। हो सकता था कि ईर्ष्या, लोभ और अपमान के वशीभूत आप मुझे मौत के घाट भी

उतरवा देते।"

सच है, अपने मस्तिष्क में जो विचार आएँ, उनकी व्यर्थ चर्चा न करते हुए, उन्हें योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण करने में जुट जाना चाहिए। कर्म, कठोरता, लगन और निष्ठा से कोई भी व्यक्ति महान् बन सकता है।

– निरूपमा कश्यप

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वप्न	–	सपना
चतुर	–	चालाक
अकस्मात्	–	अचानक
दंड	–	सज़ा
समस्या	–	उलझन
अचल सम्पत्ति	–	स्थायी सम्पत्ति
विशाल	–	बड़ा
सज्जित	–	सजाया हुआ
अतिरिक्त	–	अलग, भिन्न
दृश्य	–	जो दिख रहा है वह
ईर्ष्या	–	जलन
वशीभूत	–	वश में किया हुआ
योजनाबद्ध	–	योजनानुसार, विधिवत
निष्ठा	–	आस्था, श्रद्धा
कर्म	–	कार्य, काम

उच्चारण के लिए

उम्र, रात्रि, स्वप्न, चिल्ला, भाग्य, अन्यथा, अकस्मात्, दंड, बुद्धि, प्रशंसा, सज्जित, अतिरिक्त, आमंत्रित, विशाल, पत्नी

सोचें और बताएँ

1. राजा के प्रश्नों को किसने हल किया ?

2. सेठ ने पहली बार स्वप्न की बात बालक से कब पूछी ?
3. राजा ने मंत्री से कितने प्रश्न पूछे ?
4. स्वप्न का बालक पर क्या असर हुआ ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) सेठ ने उस लड़के से स्वप्न की बात पुनः पूछी पर वह टाल गया। उस दिन के बाद से ही–

(क) बालक छिप गया
(ख) बालक भाग गया
(ग) बालक छिपकर पढ़ने लगा
(घ) बालक नौकरी छोड़ कर चला गया ( )

(ब) जमींदार ने बालक को बुलाकर कहा–

(क) नौकरी छोड़ने को
(ख) काम करने को
(ग) बाजार जाने को
(घ) स्वप्न की बात बताने को ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(अध्ययन, अकस्मात्, साधारण नौकर, सूझबूझ)

(क) ..... एक दिन वही जमींदार राजा के यहाँ आया ।

(ख) उसने अपना..... चालू रखा । वह किसी प्रकार अपनी..... से राजा के यहाँ पर..... हो गया ।

3. लड़के का स्वभाव कैसा था ?
4. जमींदार ने बालक से क्या कहा ?
5. पड़ोसी राजा ने दो घोड़ियों को क्यों भेजा ?
6. राजा ने मंत्रीजी को क्या धमकी दी ?
7. राजा मंत्री से अपनी कन्या का विवाह क्यों करना चाहता था ?
8. मंत्री को अपनी सूझ–बूझ और चतुराई का क्या लाभ हुआ ?
9. मंत्री–राजा ने स्वप्न में क्या दृश्य देखा था ?
10. लड़के ने स्वप्न की बात सबको कब बताई ?

भाषा की बात

- इस प्रकार के शब्द सोचें और लिखें

1. सूझ–बूझ
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

यह भी करें

- कहानी को संवाद में बदलकर अपनी कक्षा में मंचन कीजिए ।
- यदि ऐसा सपना आपको आया होता, तो आप किसी को बताते या नहीं; नहीं तो क्यों ?

अज्ञान ही मोह और स्वार्थ की जननी है।
–महात्मा गाँधी